प्र.1- 'भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में पशुपालन एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है।' इसके महत्त्व को स्पष्ट करते हुए इसके विकास के लिए आवश्यक सुझावों की चर्चा कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

"Husbandry is an important economic activity in developing country like India." Explaning the importance of it, discuss the suggestions necessary for its development.
(150 Words, 10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- पशुपालन की अर्थव्यवस्था की दृष्टि से देश में महत्त्वपूर्ण भूमिका है। भारत में मुख्यत: फसल और पालतू पशुओं (जानवर, पक्षी और मछली) के मिश्रण वाली कृषि प्रणाली का प्रभुत्त्व है। पशुपालन (जिसमें गाय, ऊँट, भैंस, बकरी, सूअर, भेड़ आदि) भारत में एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। यह सामाजिक न्याय, गरीबी, निवारण, रोजगार, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है। सामाजिक-आर्थिक विकास में पशुपालन की कुछ महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है:-

- पशुपालन एवं कृषि गतिविधियाँ प्रत्यक्ष रूप से एक-दूसरे से संबंधित होती हैं। जैसे-पशुपालन के लिए कृषि से विभिन्न प्रकार के आगत (उदाहरण-चारा, भूसी इत्यादि) उपलब्ध होते हैं, ठीक उसी प्रकार पशुपालन द्वारा कृषि हेतु आवश्यक जैविक उर्वरक, फसलों की ढुलाई जैसी सुविधा उपलब्ध होती है।
- भारत जैसे-विकासशील देश में पशुपालन जीविकोपार्जन का एक महत्त्वपूर्ण आधार है भारत में लगभग 56 प्रतिशत गामीण परिवार भूमिहीन हैं। इसके अतिरिक्त 86 प्रतिशत किसान सीमांत एवं लघु हैं। ऐसी स्थिति में पशुधन उनके आय का एक अच्छा स्रोत माना जाता है।
- सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी पशुपालन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राय: यह देखा गया है, कि भूमि की तुलना में पशुधन का वितरण निर्धन लोगों के पक्ष में होता है। उदाहरण के तौर पर, वर्ष 2003 में हुए एक सर्वेक्षण में पता चलता है कि देश में कुल ग्रामीण परिवारों में 48 प्रतिशत सीमांत कृषक परिवार हैं, जिनके पास लगभग 50 प्रतिशत भाग दुधारू पशुओं का है, लेकिन कृषि योग्य भूमि का मात्र 24 प्रतिशत ही स्पष्ट हो पाया है।
- भारत के अधिकांश राज्यों के पिछड़े इलाकों आदि में छिपी बेरोजगारी की स्थिति होने के कारण लोग बिना उत्पादकता या नकारात्मक उत्पादकता भरे कार्यों में संलग्न रहते हैं। पशुपालन के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी बेरोजगारी, अल्प बेरोजगारी की समस्याओं से निपटने में मदद् मिलती है।
- पशुपालन, ग्रामीण महिलाओं के लिए एक आर्थिक अनुकूलन गतिविधि है जिसके तहत् वे रोजगार का सृजन कर सकती हैं। इस प्रकार पशुपालन महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- पशुधन पूँजी का भंडार होता है और यह प्राकृतिक आपदाओं से फसल बर्बादी के समय तथा सूखा, भुखमरी इत्यादि में किसानों को बीमा के समान सुरक्षा देता है।
- पशुपालन के माध्यम से लोगों में आय का सृजन आसानी से हो सकता है। इस संदर्भ में वे नियमित रूप से पशु उत्पादों को बाजार में बेच सकते हैं।

- पशुपालन स्वास्थ्य की दृष्टि से निर्धन लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका रखता है। इसके माध्यम से प्रोटीन और वसा तथा अन्य पोषक तत्त्वों की प्राप्ति से कुपोषण एवं अन्य घातक बीमारियों से रक्षा होती है।

महत्त्व:-

- पशुपालन क्षेत्र, भारत के GVA (Gross value addition) में लगभग 4% का योगदान करता है। पशुपालन क्षेत्र कृषिगत जी.वी.ए. में लगभग 25% का योगदान करता है। भारतीय पशुओं की उत्पादकता वैश्विक औसत की तुलना में 20 से 60% तक कम है।
- पशुपालन क्षेत्र ने कुल मिलाकर 12वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान 4.5 फीसदी की वृद्धि दर हासिल की है। जो कृषि क्षेत्र (3.5 फीसदी) और खाद्य उत्पादन (1 फीसदी) से ऊँची है।
- भारत में पशुधन की आबादी करीब 53 करोड़ है। यह पूरे कृषि, मत्स्य और वन क्षेत्र के 26 फीसदी के बराबर है।
- गोश्त उत्पादन की वृद्धि दर 5.7 फीसदी है और कुल उत्पादन 48 लाख टन है। (अब भी इस क्षेत्र में मांग-आपूर्ति में भारी अंतर है और इसलिए विस्तार की गुंजाइश भी है।

सुझाव:-

दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने और जारी आनुवांशिक विकास को स्थायित्व देने के लिए पशुधन को चारे एवं खाद्यान्न की पर्याप्त उपलब्धता होनी चाहिए। भारत में हरे चारे की कमी करीब 34 फीसदी आंकी गई है। केन्द्र सरकार ने 2014 से केन्द्र की सहायता वाली संशोधित फीड एंड फोड्डर योजना शुरू की है, ताकि राज्यों में चारा उत्पादन में वृद्धि की जा सके। भारत में अच्छी नस्ल के पशुधन उत्पादन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इस सदर्भ में कृत्रिम गर्भाधान से जुड़ी इंफ्रा (Infra) और प्रशिक्षित मानव शक्ति के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पशुओं के अच्छे स्वास्थ्य के साथ टीकाकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए। केन्द्रीय बजट 2018-19 में यह कहा गया है कि किसान क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ पशुपालकों को भी दिया जाएगा।

उदारीकरण के लागू होने के बाद पशुपालन क्षेत्र में लोगों की आय बढ़ने के कारण अच्छे अवसर उत्पन्न हुए हैं। अत: पशुधन का लाभ उठाने के लिए इन बातों पर गंभीरतापूर्वक विचार किया जाना चाहिए।

प्र.2- आपूर्ति शृंखला प्रबंधन क्या है? ऊर्ध्वप्रवाह एवं अनुप्रवाह आपूर्ति शृंखला प्रबंधन में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की आलोचना कीजिए। (150 शब्द, 10 अंक)

What is supply chain management? Critically analyse the foreign direct investment in upward and downward supply chain management.

(150 Words, 10 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- आपूर्ति शृंखला सुविधाओं एवं वितरण विकल्पों का संजाल है, जिसके अंतर्गत सामग्री की खरीददारी से लेकर उसका मध्यवर्ती एवं निर्मित उत्पादों में रूपांतरण और निर्मित उत्पादों का ग्राहकों को वितरण करना शामिल है। दूसरे शब्दों में, आपूर्ति शृंखला प्रबंधन के अंतर्गत 'इंड टू इंड' या 'फर्म टू फोर्क' की समस्त मूल्य शृंखला को सम्मिलित किया जाता है जो अधिग्रहण, परिवहन, भंडारण, प्रसंस्करण, वितरण आदि गतिविधियों से जुड़ी होती हैं। आपूर्ति शृंखला प्रबंधन का मुख्यत: 'ऊर्ध्वप्रवाह' एवं 'अनुप्रवाह' अलग-अलग उद्योगों की उत्पादन प्रक्रियाओं के चरणों को इंगित करता है। ऊर्ध्वप्रवाह के अंतर्गत कच्चे माल की खोज एवं उसका निष्कर्षण शामिल होता है। यह माल के प्रसंस्करण से संबंध नहीं रखता है। अनुप्रवाह स्तर में ऊर्ध्व प्रवाह स्तर पर संग्रह किए गये पदार्थों अथवा कच्चे माल को प्रसंस्करण कर उन्हें निर्मित उत्पादों में बदला जाता है। इस चरण के अंतर्गत वास्तविक बिक्री भी शामिल है। उपयोगकर्त्ता निर्मित उत्पाद के अनुसार अलग-अलग होते हैं। अनुप्रवाह प्रक्रियाओं में निर्मित उत्पाद के माध्यम से ग्राहकों से प्रत्यक्ष रूप से संपर्क स्थापित होता है, चाहे वह कोई भी उद्योग हो।

भारत में सुधार काल में भी इस क्षेत्र में संगठित ढंग से विकास बहुत कम हुआ है। कृषि उत्पादों के क्षेत्र में उपर्युक्त बाजारवादी सुधारों के अभाव में भंडारण, श्रेणीकरण, पैकेजिंग आदि कार्य बाधित हुए हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है। कि इस क्षेत्र में कॉरपोरेट क्षेत्र की ओर से भारी निवेश की जरूरत है, जिसे अभी पर्याप्त रूप से आकर्षित नहीं किया गया। निजी क्षेत्र इस क्षेत्रक में निवेश की अनिच्छा के प्रमुख कारण हैं- पूंजी, संचार तंत्र, अनुभव का अभाव तथा कृषि बाजार का असहायक नीतिगत ढांचा। यही कारण है कि भारत सरकार ने खुदरा शृंखला विकास में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हेतु अधिक आजादी देने का निश्चय किया है। उम्मीद है, कि इच्छुक विदेशी कंपनियाँ केवल निधि ही नहीं उपलब्ध कराएंगी, बल्कि भारत को इस क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय अनुभव का भी लाभ मिलेगा। वैश्विक बाजार में बने रहने तथा वैश्वीकरण का आर्थिक लाभ उठाने के लिए भारत को अपने आपूर्ति शृंखला प्रबंधन में निम्नलिखित की जरूरत है- संगठित खुदरा बाजार, बाजार स्तर पर संचार तंत्र, कच्चा माल, उत्पादन, शल्य प्रतिरूप आदि के पूर्णतया अद्यतन आंकड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पैकेजिंग, इत्यादि।

उपर्युक्त कथनों से स्पष्ट है उपरोक्त का प्रबंधन करना, शीर्ष वैश्विक संस्थाओं के लिए कठिन नहीं होगा क्योंकि उनके पास विधियाँ है और अपने व्यवसाय को दुनिया के आगे बढ़ते इलाकों में विस्तारित करने की इच्छा है।

प्र.3- भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या एवं आवश्यक खाद्यान्न सुरक्षा की दृष्टि से भूमि सुधार क्यों आवश्यक है? चर्चा कीजिए। **(150 शब्द, 10 अंक)**

Why is land reform needed in view to increasing population and necessary food security of India? Discuss. **(150 Words, 10 Marks)**

मॉडल उत्तर

उत्तर:- भारत में कृषि उत्पादकता को बढ़ाने तथा गरीबी निवारण और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए भूमि सुधार को आवश्यक माना गया है। भारत में समकालीन भूमि सुधार के माध्यम से जमींदारी व्यवस्था समाप्त की गई, सीलिंग एक्ट, काश्तकारी कानून में सुधार, काश्तकारों के अधिकार, अतिरिक्त जमीन का पुनर्वितरण और चकबंदी जैसी व्यवस्थाओं में सुधार संभव हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् से ही भूमि सुधार, अधिकांशत: राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र में प्राथमिकता से केन्द्र बिन्दु बने हुए हैं। आज भी लघु सीमांत किसानों एवं भूमिहीनों की बड़ी संख्या के कारण यह प्राथमिकता का क्षेत्र बना हुआ है। भारत के कुल भू-क्षेत्र के लगभग 60 प्रतिशत भाग पर कृषि कार्य होता है। भारत के कुल क्षेत्र के वन क्षेत्र लगभग 20 प्रतिशत भाग में 5 प्रतिशत भू-भाग, जिनका लेखा-जोखा नहीं है, शेष 15 प्रतिशत भू-भाग पर नदी, पहाड़ और गैर कृषि कार्य जैसे उद्योग में प्रयुक्त हैं। कृषि क्षेत्र 60% भू-भाग का प्रयोग कर कुल 14-16 प्रतिशत सकल घरेलू उत्पाद देता है। दूसरी ओर औद्योगिक एवं सेवा-क्षेत्र, जो केवल 11 प्रतिशत भू-भाग इस्तेमाल करते हैं, सकल घरेलू उत्पाद में 8 प्रतिशत का योगदान करते हैं। भविष्य में संवृद्धि के लिए बड़े भू-भाग का उपयोग, गैर-कृषि कार्यों, जैसे उद्योग और सेवा-क्षेत्र के क्रियाकलापों में किया जाएगा, ढांचागत निर्माण बढ़ेगा और इन सबके लिए अधिक भू-क्षेत्र की आवश्यकता पड़ेगी।

निष्कर्ष:-

भूमि सुधार देश में कृषि क्षेत्र के महत्त्व को कम करके आंकना नहीं है। मुख्य मुदद् कृषि उत्पाद में संवृद्धि का है, न कि कृषि कार्य के भू-क्षेत्र का। भारत की बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकता और खाद्यान्न-सुरक्षा की दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है, परन्तु साथ ही इसे वृद्धि का संचालक नहीं माना जा सकता। इस क्षेत्र की वृद्धि के संचालन के लिए वृहद् विविधतापूर्ण उत्पादन और औद्योगिक आधार की आवश्यकता होगी और इसके लिए कृषि-क्षेत्र का कुछ भू-भाग औद्योगिक क्षेत्र द्वारा प्रयोग करना पड़ेगा। कम-से-कम इस तथ्य की राजनीतिक सहमति तो होनी चाहिए।

प्र.4- **भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता क्या है? भारतीय कृषि के औद्योगिक विस्तार के लिए आवश्यक प्रमुख सुझावों की चर्चा कीजिए।** **(250 शब्द, 15 अंक)**

What is the main feature of Indian agriculture economy? Discuss the necessary suggestions for the industrial explansion of Indian agriculture.

(250 Words, 15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान आजादी के पूर्व एवं उसके बाद से ही रहा है। इसका प्रमाण इस क्षेत्र की उस बड़ी जनसंख्या से मिलता है, जो वर्तमान में अपनी जीविका के लिए (कृषि) पर आश्रित है। भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषताएं निम्नवत् हैं:-

- बात मौद्रिक दृष्टि से की जाए, तो भारत में सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में इसका योगदान 17.4 प्रतिशत है। वित्तीय वर्ष 1950-51 में यह हिस्सा 55.4 प्रतिशत था।
- कृषि, भारतीय अर्थव्यवस्था का न केवल सबसे बड़ा क्षेत्र है, बल्कि सबसे मुक्त निजी क्षेत्र भी रहा है। यह एक मात्र व्यवसाय है, जिस पर व्यक्तिगत आयकर का भार अभी नहीं है।
- यह भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा असंगठित क्षेत्र है। कृषि, असंगठित क्षेत्र के कुल श्रम बल के 90 प्रतिशत से भी अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करती है। (भारतीय अर्थव्यवस्था में कुल श्रम का लगभग 94 प्रतिशत)।
- डब्ल्यू.टी.ओ. के वाणिज्यिक आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2016 में विश्व में भारतीय कृषि निर्यात व आयात क्रमशः 2.40 प्रतिशत और 1.46 प्रतिशत था। 2009-10 में कृषि निर्यात जी.डी.पी. का 7.95 प्रतिशत हो गया। वर्तमान समय में कृषि आयात भी जीडीपी का 4.90 से बढ़कर 6.1 प्रतिशत हो गया।
- कृषि का भारत के औद्योगिकी विकास तथा राष्ट्रीय आय से गहरा संबंध है। यदि कृषि उत्पादन में 1 प्रतिशत की वृद्धि होती है, तो परिणामस्वरूप औद्योगिक उत्पादन में लगभग 0.5 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय आय में लगभग 0.7 प्रतिशत की वृद्धि देखी जाती है।

भारतीय कृषि के औद्योगिक विकास की दिशा में उठाये जाने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण कदम निम्नवत् हैं:-

- किसानों को गैर-कृषि क्षेत्र में लाभकारी रोजगार की प्राप्ति हो सके, इसके लिए एक प्रभावी नीति को अमल में लाना आवश्यक है। जैसे-कृषि समाज में सही प्रकार से रोजगार कौशल का विकास इत्यादि। समाज में रोजगार का सृजन स्थानीय रूप में करना, ताकि नियोजित विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटक भी शामिल हो सकें। कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना, इस क्षेत्र से जुड़ा एक ऐसा कदम होगा, जिसका अर्थव्यवस्था को (कृषि क्षेत्र को) बहुआयामी लाभ मिलेगा। किसानों को अतिरिक्त आय की प्राप्ति, कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता में कमी, ग्राम नगर प्रवसन में कमी, शहरी व्यवस्था पर पड़ने वाले उच्च भार में कमी इत्यादि। भारत को वैसे उद्योगों का विस्तार करना चाहिए, जिनमें द्रुत और बड़ी संख्या में रोजगार सृजन किया जा सके। विनिर्माण उद्योग को बढ़ावा देना, इस दिशा में सही कदम होगा। जैसे-सरकार की नई विनिर्माण नीति, मेक इन इंडिया, स्टार्ट-अप इंडिया, मुद्रा बैंक इत्यादि इस दिशा में उठाए गये अच्छे कदम भी शामिल हैं। हाल के वर्षों में भूमि अधिग्रहण एक काफी विवादास्पद मुददा् बन गया है। देश को जल्द ही इसके लिए एक ऐसी नीति अमल में लानी होगी, जो द्रुत, प्रभावी हो। जैसे-जमीन को पट्टे पर प्राप्त करने की नीति इस दिशा में एक काफी अच्छा प्रयास होगा। इस प्रकार उद्योग जगत के विस्तार को तेज किया जा सकता है।

प्र.5- एकीकृत ऊर्जा नीति क्या है? भविष्य में बढ़ती ऊर्जा मांग की पूर्ति हेतु सरकार द्वारा चलायी गई विभिन्न सरकारी पहलों की संक्षिप्त में चर्चा कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

What is Unified Energy Policy? Give a brief discussion on the various government initiatives run by the government to meet the increasing energy demand in India.

(250 Words, 15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- एकीकृत ऊर्जा नीति, भारत की प्राथमिक ऊर्जा उपयोग तीव्रता में पर्याप्त कमी की अनुमति के बाद भी वर्ष 2031-32 तक 9 प्रतिशत की सतत् वृद्धि दर प्रदान करने हेतु विस्तारित करने के लिए प्रक्षेपित है। इस नीति के अनुसार 2031-32 तक ऊर्जा की 8 लाख मेगावॉट की अत्यंत विशाल माँग होगी, जबकि वर्तमान क्षमता सिर्फ 2 लाख मेगावॉट की है। इसे उपलब्ध कराने के लिए ढाई लाख करोड़ रुपये का निवेश केवल ऊर्जा क्षेत्र में उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। सौर, पवन, गैस और कोयला आधारित ऊर्जा की भारी मांग को पूरा करने के लिए नीति आयोग ने यह एकीकृत नीति पेश की है। वर्तमान समय में देश के सभी स्रोतों की कुल बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता 250000 मेगावॉट है, जबकि व्यस्त समय में बिजली की कमी करीब 3.6 प्रतिशत है। सरकार ने 2022 तक अक्षय ऊर्जा स्रोतों से कुल 175000 मेगावॉट बिजली उत्पादन का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। जिसमें से 100000 मेगावॉट क्षमता सौर ऊर्जा की होगी। इस नीति के अंतर्गत कोयला आधारित थर्मल ऊर्जा पर निर्भरता बनी रहेगी तथा वर्ष 2031-32 तक कोयला, ऊर्जा का मुख्य स्रोत होगा और कुल उत्पादित ऊर्जा का 60 प्रतिशत इसी से प्राप्त होगा। इसमें से 47 प्रतिशत योगदान थर्मल पावर का होगा। दूसरे स्रोत पेट्रोलियम की बात की जाए, तो यह 25 प्रतिशत तक ही ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति करेगा, परन्तु समस्या यह है, कि इसका नवीनीकरण नहीं किया जा सकता। वर्तमान में कुल आवश्यकता का 70% पेट्रोलियम आयात किया जाता है और वर्ष 2030-31 तक यह बढ़कर 90 प्रतिशत पहुंच जाएगा। इस स्थिति में अमेरिका और चीन के बाद भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा आयातक देश बन जाएगा। ऊर्जा के अन्य स्रोतों में जल-विद्युत की संभावना 1.5 लाख मेगावॉट अर्थात् वर्ष 2031-32 की ऊर्जा आवश्यकता का कुल 20% आंकी गई है। वहीं परमाणु ऊर्जा के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकते, परन्तु यह बहुत खर्चीला है तथा साथ ही रेडिएशन परमाणु कचरे का निस्तारण और उनका दीर्घकालीन प्रभाव, महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं, जिनका हल मौजूद होना चाहिए।

ऊर्जा की आवश्यकता के अनुमानों को समझते हुए इसके उत्पादन को निर्णायक रूप से आगे बढ़ाना शुरू कर दिया है। यह कार्य 9वीं पंचवर्षीय योजना से प्रारंभ है। इसके बाद की पंचवर्षीय योजनाओं में ऊर्जा उत्पादन पर और ज्यादा योजनानुसार व्यय किया जा रहा है। दुर्भाग्यवश निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जा सके हैं। 9वीं योजना, ऊर्जा उत्पादन का निर्धारित लक्ष्य केवल 47% ही प्राप्त कर सकी है। इसके आगे की योजनाएं (11वीं योजना) अपने निर्धारित लक्ष्य का

मात्र 50% ही प्राप्त कर सकी हैं। 12वीं पंचवर्षीय योजना में यह महत्त्वाकांक्षी 88 हजार मेगावॉट उत्पादन ऊर्जा का लक्ष्य अगले पाँच वर्षों में प्राप्त करना था।

सौभाग्यः- प्रधानमंत्री सहज बिजली, हर घर योजना के तहत 31 मार्च, 2019 तक सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके तहत् 9 राज्यों में 100% घरों का विद्युतीकरण हुआ है। एकीकृत ऊर्जा विकास योजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्र में गुणवत्ता और विश्वसनीय 24×7 निर्बाध बिजली आपूर्ति प्रदान करना है। उज्ज्वल डिस्कॉम एश्योरेंस योजना का शुभारंभ नवंबर, 2015 में किया गया, जिसका उद्देश्य लगभग 4.3 लाख करोड़ रुपये के लम्बे समय से कर्ज और भविष्य में संभावित नुकसान का स्थायी समाधान करना है। इसके अतिरिक्त दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (2014) के तहत् 'सामान्य श्रेणी' वाले राज्यों में 60 प्रतिशत और 'विशेष श्रेणी' वाले राज्यों में 85 प्रतिशत के केन्द्रीय सरकार के सहयोग से राज्यों और डिस्कॉमों द्वारा इस स्कीम को कार्यान्वित किया जा रहा है।

प्र.6- भारत में भूमि सुधार के प्रमुख उद्देश्य क्या हैं? भारत सरकार द्वारा भूमि सुधार के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उठाए गये आवश्यक कदमों की चर्चा कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

What are the main objectives of land reform in India? Discuss the necessary steps taken to meet the objectives of land reforms by the India Government.

(250 Words, 15 Marks)

मॉडल उत्तर

उत्तर:- भारत में भूमि सुधार ने आधिकारिक स्वरूप एवं प्रभाव की स्थिति में परिवर्तन लाने वाले मुद्दों को जगाने का काम किया है। स्वतंत्रता के बाद सभी अर्थव्यवस्थाएं औद्योगीकरण से पहले कृषि पर आधारित थीं, सिर्फ उनकी अवधि में अंतर था। ज्यों ही प्रजातांत्रिक देश विकास की ओर अग्रसर होने लगे, सबसे पहले इन देशों ने कृषि के क्षेत्र में सुधारों को समयबद्ध तरीके से पूरा किया। चूंकि कृषि पर आधारित अर्थव्यवस्था अधिकांश लोगों की आजीविका का साधन थी, इसलिए इस क्षेत्र में सुधार से अधिकतर लोग लाभान्वित होंगे तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा। स्वतंत्रता प्राप्ति के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी, जिसमें असमानता व्याप्त थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1935 में ही इस बात की घोषणा की थी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भूमि सुधार लागू किए जाएंगे, अन्य अर्थव्यवस्थाओं की तरह, जिन्होंने इन सुधारों को पहले लागू किया था।

भारत में भूमि सुधार के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत थे:-

भारतीय कृषि में विद्यमान संस्थागत विसंगतियों को दूर करना, जिन्होंने कृषि उत्पादन को बाधित किया है। जैसे-जोतों का आकार, भूमि स्वामित्व, भूमि उत्तराधिकार, काश्तकारी सुधार, मध्यस्थों की समाप्ति, आधुनिक संस्थागत सहायता तथा आधुनिकीकरण आदि। भूमि सुधार के अन्य उद्देश्यों का संबंध भारत में सामाजिक-आर्थिक असमानता से था। भूमि स्वामित्व में व्याप्त असमानता का नकारात्मक प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ता था। यह जाति व्यवस्था एवं समाज द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठा एवं दर्जों से भी जुड़ा हुआ था। देश के 80 प्रतिशत से अधिक लोगों की जीविका कृषि व्यवस्था पर आधारित थी। भूमि सुधार का सामाजिक-राजनीतिक महत्व इसलिए था क्योंकि इसने देश की पुरानी कृषि व्यवस्था को विघटित करने का प्रयास किया। देश में भूमि सुधार एक बड़ा मुद्दा बन गया तथा सरकार द्वारा भूमि को कब्जे में लेने तथा उसे भूमिहीनों को आवंटित करने के कारण इसे बदनामी भी मिली। भूमि सुधार का तीसरा उद्देश्य प्रकृति से समसामयिक था, जिसे पर्याप्त सामाजिक-राजनीतिक महत्त्व नहीं मिला। इसका उद्देश्य, कुपोषण तथा खाद्यान्न की कमी को कृषि उत्पादन में वृद्धि कर दूर करना था।

सरकार द्वारा भूमि सुधार के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उठाए गये प्रमुख कदमः-

मध्यस्थों की समाप्तिः-

इसके अंतर्गत देश में लम्बे अरसे से चली आ रही जमींदारी, महालवाड़ी और रैय्यतवाड़ी व्यवस्था को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया गया।

काश्तकारी सुधारः-

जोतदारों के द्वारा भूमि मालिक को दी जाने वाले लगान की एक दर नियत कर दी गई। जमीन जोतने वाले का जोत अधिकार सुरक्षित किया गया। काश्तकारों/बटाईदारों को अंत में उनके द्वारा जोती जा रही जमीन का स्वामी बनाने की कोशिश की गई।

कृषि का पुनर्गठनः-

हदबंदी कानून लागू कर भूमिहीन गरीब लोगों के बीच भूमि का पुनः वितरण कुछ राज्यों को छोड़कर (प. बंगाल, आंध्र प्रदेश, केरल) शेष भारत में सफल रहा। जैसे-पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश सहकारी कृषि का सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक आधार था एवं इसका उपयोग बड़े किसानों द्वारा हदबंदी कानून से अपनी भूमि को बचाने के लिए किया गया।